सभी सर्विस के समाचार में बिजी हैं।बच्चों की दिल होती है रहमदिल बनकर कोई पर रहम करें।तो वो बाप से वर्सा लेवें।अगर रहमदिल नहीं बनते, सर्विस नहीं करते तो बर्थ नॉट ए पैनी हैं।फिर उनको भी बंदरों के साथ मिला देते हैं।सब सर्विस में ही बिजी हैं।कोई चित्र बना रहे हैं ,कोई क्या कर रहे हैं।अब देहली में प्रदर्शनी हो रही है।दो मास के लिए।वहां चार स्टॉल लिये हैं।खर्चा तो होता है ना।बाप भी खुश होते हैं।ऐसे मौके पर चार क्यों ?और भी चार ले लेवें तो अच्छा है।अच्छे भभके से करनी चाहिए।ऐसे समय खर्चे से डरना नहीं है।देहली में तो सबसे जास्ती सर्विस करनी है।बच्चे जितनी सर्विस करते हैं उतना ही बाप खुश होते हैं।खर्चे का खयाल नहीं किया जाता।बच्चों को उमंग रहनी चाहिए कि हम अपने लिए भी और भारत के लिए भी इस सर्विस में लग जावें।भारत में ही स्वराज्य स्थापन करना है ना।उमंग रहनी चाहिए।प्रदर्शनी में क्या2 मुफ्त सौगात है?जैसे कि मेडलस बन रहे हैं।पर्स आदि भी अच्छे हैं।चित्र तो इनमें हैं।कोई को सौगात देने, प्रदर्शनी में बिक भी सकते हैं।इन चित्रों से भी मनुष्य का जीवन हीरे जैसा बन सकता है।बच्चों में सर्विस का उमंग ,शौक नहीं।विचार ,सागर ,मंथन नहीं करते।जैसे कि कब्रदाखिल हुये पड़े हैं।बाप के दिल पर नहीं तो मुर्दों की कतार में ही जाते हैं।कहा जाता है घर की नदी को कोई पूछता ही नहीं।बाहर में रहने वाले बच्चों को कितना शौक है।यहां भी सीजन में तो बहुत ही आते हैं।यहां भी प्रदर्शनी हो तो बहुत आकर लाभ प्राप्त करें।खुशी होती है ना।ऐसे मत समझो कि बाबा को सर्विस का शौक नहीं है।यहां तो सर्विस है नहीं।वहां तो बहुत आकर मानेंगे।बाबा को सर्विस का शौक है तब ही तो जाते हैं ना।ऐसे नहीं कि बॉम्बे घूमने या मित्र ,सम्बंधियों आदि को मिलने जाते हैं।नहीं।बच्चों को रिफ्रेश करने जाते हैं।बाप समझाते हैं यह समय ही है सर्विस करने का।किसी को भी जी दान देने का।उसमें से भी माताओं को और कुमारियों को तो बहुत ही खड़ा होना चाहिए।कन्याओं पर तो सबसे ही जास्ती रेस्पांसिबिल्टी है।कन्याओं को तो कोई बंधन नहीं है।उनको तो सर्विस के लिए उछलना चाहिए।फैशन आदि भी नहीं करना है।फैशन वाले कपड़े पहनते हैं तो देहअभिमान आ जाता है।फैशन वाली कन्याओं का कब संग भी नहीं करना चाहिए।हर समय बुद्धि में यही खयाल रहे कि दूसरों का कल्याण कैसे करें?शिव की पूजा करते हैं।बाबा खुश होते हैं?एक तरफ तो उस पर फूल चढ़ाते हैं, पूजा करते हैं दूसरी तरफ गाली दे देते हैं।यह कोई को भी पता नहीं कि शिवबाबा और उंच ते उंच वर्सा देते हैं।तुम्हारे में से भी नम्बरवार समझते हैं।आधा कल्प से बिछड़े हुये हो।काम चिक्षा पर चढ़2 कर सड़ मरे हो।इनको कहा ही जाता है कामी कुत्ते।जो जास्ती कुतरियों पिछाड़ी धक्के खाते हैं।कुतरे और कुतरियां कहा जाता है ना।इसलिए नाम ही है वैश्यालय।कितना बड़ा नाम है।बेहद का बाप बैठ समझाते हैं।इस समय को ही कहा जाता है विषय वैतरणी नदी।बाप वैश्यालय से शिवालय बनाते हैं।बाप आते हैं तुमको गॉड–गॉडेज बनाने।कोई भी अवगुण हो तो उनको निकालना चाहिए।कुत्ते की पूंछ मिसल नहीं बनना चाहिए।कुत्ते का पूंछ कब सीधा ही नहीं होता।देहअभिमान का भी पूंछ है, क्रोध का भी पूंछ है।यह बड़ी पूंछें हैं।मोह भी जैसे कि पूंछ है।टूटती ही नहीं।शिवबाबा से प्रीत रखते ही नहीं।तुमको तो बहुत लव होना चाहिए।सतयुग में भी तो लव है ना आपस में।तुम ब्राह्मणों का तो और ही जास्ती प्यार होना चाहिए।ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण तो देवताओं से भी उंच हैं।एक–दो को डहारना नहीं है।कोई आदत नहीं मिटती है तो समझो कुत्ते का पूंछ है।कितना भी ज्ञान योग की नदी में डालो तो भी क्रोध नहीं छोड़ते हैं तो समझा जाता है इनकी तकदीर ही ऐसी है।तुम्हारी एमऑब्जेक्ट है ही फूल बनना, देवताई गुण धारण करना।मुख से पत्थर निकलते हैं तो पत्थरनाथ पत्थरनाथिनी बन जाते हैं।रत्न निकलते हैं तो पारस नाथ पारसनाथिनी कहा जाता है।अपनी जांच करनी चाहिए हम फूल बन खुशबू देते हैं?कहीं कांटा तो नहीं हैं।अच्छा ,ओम